Date - 01/02/2025
Time - 10. AM

डॉ मनोज कुमार सिंह
मनोविज्ञान विभाग
महाराजा कॉलेज आरा

P.G - 2nd Semester
Paper - CC - 7
Psychopathology

Topic :-

मनोविकृति विज्ञान की परिभाषा
(Definition of Psychopathology):

परिचय (Introduction) :

मनोविकृति विज्ञान (Psychopathology) या जिसे असमान्य मनोविज्ञान भी कहा जाता है, मनोविज्ञान को एक एसी शाखा है जिसमें मानसिक रोगी के व्यवहारों, लक्षणों, कारणों आदि का गहन रूप से अध्ययन किया जाता है। हम अपने समाज के प्राय: ऐसे व्यक्तियों को देखते हैं जो काफी दु:खी, विषादी (depressed) बेचैन तथा तनाव ग्रस्त होते हैं। वे प्राय: यह कहते हैं कि अब उनकी जिदंगी बेकार हो चुकी है। वे अब कुछ नहीं कर सकते हैं। वे बहुत घबड़ाये हुए रहते हैं। हर व्यक्ति अपने जिन्दगी में कुछ ऐसा मोड़ जरूर पाता है जहाँ उसे तनाव या प्रतिबल (Stress) का समय करना पड़ता हो तथा वह काफी घबड़ा जाता हो। परंतु कुछ लोग ऐसे होते हैं जो ऐसी परिस्थितियों के प्रति बहुत ही तीव्र एवं अनत्य प्रतिक्रियाएँ (extreme reactions) करते हैं। इस इकाई में हम मनोविज्ञान के उस शाखा के मूल तत्वों (Fundamentals) पर विचार करेंगे जिनमें ऐसी अपअनुकूली व्यवहार (Maladaptive behaviour) का अध्ययन किया जाता है। असमान्य या अपअनुकूली व्यवहार की कुछ अपनी विशेषताएँ होतौ हैं जिसके कारण उसकी पहचान आसानी से होती है। ऐसे अपनुकूली व्यवहार का अध्ययन सिर्फ नये वैज्ञानिक ही नहीं बल्कि अन्य पेशेवरो (Professionals) जैसे माश्चिकित्सक (Psychiatrist) मनविश्लेषक (Psychoanalyst), मनश्चिकित्मीय सामाजिक कार्यकर्ता (Psychiatric social worker) आदि द्वारा भी किया जाता है।

मनोविकृति विज्ञान की परिभाषा (Definition of Psychopathology):

मनोविकृति या मनोरोग विज्ञान (Psychopathology) मनोविज्ञान की एक प्रमुख शाखा है जिसमें असामान्य व्यक्तियों के व्यवहारों एवं मानसिक प्रक्रियाओं (Mental processs) कर अध्ययन किया जाता है। इसे असामान्य मनोविज्ञान (Abnormal Psychology) भी कहा जाता है। सचमुच में इस विज्ञान का मूल सम्बंध विकृत व्यवहारों के निदान, वर्गीकरण, उपचार एवं उनकी व्याख्या करके के लिए है। मनोविकृति की कुछ महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय परिभाषा इस प्रकार है:

कारसन एवं बुचर (Carson & Butcher, 1992) के अनुसार," असामान्य मनोविज्ञान या मनोविकृति विज्ञान को लम्बे अरसे से मनोविज्ञान का एक ऐसा क्षेत्र समझा जाता है जो सामान्य व्यवहार को समझने, उपचार तथा उसके रोकथाम से सम्बंधित है। (Abnormal Psychology or Psychopathology had long been referred to as that part of the field of psychology concerned with the understanding, treatment and prevention of abnormal behaviour)

ओल्टमान्नस तथा इमेरी (Oltmanns & Emery, 1995) के अनुसार, "मानसिक रोगों के अध्ययन में मनोविज्ञान विज्ञान का उपयोग ही असामान्य मनोविज्ञान कहलाता हैं।" (Abnormal Psychology is the application of psychological science to the study of mental disorder)

यदि हम इन परिभाषाओं पर ध्यानपूर्वक गौर करें तो हमें मनोविकृति विज्ञान के बारे में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य मिलेंगे जो इस प्रकार हैं:

(i) मनोविकृति विज्ञान या मनोरोग विज्ञान मनोविज्ञान की एक विशिट शाखा है।

(ii) मनोविकृति विज्ञान में असामान्य व्यवहारों के बारे में अध्ययन किया जाता है। इसमें विशेष कर असमान्य व्यवहार के निदान (diagnosis), वर्गीकरण (Classifications), उपचार (Treatment) तथा रोकथाम पर बल डाला जाता है।

(ii) मनोविकृति विज्ञान में असामान्य व्यवहारों की सैद्धान्तिक व्याख्या (Theoretical explanation) करने की कोशिश की जाती है। इस व्याख्या में अन्य शाखाओं के समान महत्वपूर्ण तथ्यों की व्याख्या कुछ प्रमुख सिद्धान्तों के रूप में किया जाता है।

स्पष्ट हुआ कि मनोविकृति में व्यक्ति के असामान्य व्यवहारों एवं असामान्य मानसिक प्रक्रियाओं का निदान, वर्गीकरण, रोकथाम तथा उपचार से सम्बंद्ध तथ्यों का वैज्ञानिक अध्ययन किया जाता है।

असमान्य व्यवहार के चार डी
(Four D's of Abnormal Behaviour):

सामान्य व्यवहार (Normal behaviour) मनोवैज्ञानिक तथा अन्य विशेषज्ञों के बीच एक विवादास्पद विषय के रूप में आज भी बना हुआ है, क्योंकि जो व्यवहार किसी खास परिस्थिति या संस्कृति या समाज में सामान्य माना जाता है वही व्यवहार दूसरे समाज, परिस्थिति तथा संस्कृति में असामान्य माना जाता है। जैसे मुस्लिम संस्कृति में चचेरे भाई-बहन के बीच वैवाहिक सम्बंध को सामान्य व्यवहार माना जाता है जबकि हिन्दु समाज में इसे काफी घृणित व्यवहार के रूप में पहचान की गयी है। ऐसी परिस्थिति में सामान्य व्यवहार को सर्वमान्य ढंग से परिभाषितकरना काफी कठिन कार्य होता है। निःसंदेह तब असामान्यता की भी पहचान संदेहास्पद हो जाती है। हालांकि यदि शाब्दिक अर्थ पर गौर करे तो ज्ञात होता है कि असामान्य व्यवहार वह है जो सामान्य नहीं है या सामान्य से परे अथवा भिन्न है। (Abnormal is one which is not normal or away from normal)। परन्तु इससे असामान्य व्यवहार का स्वरूप पूरी तरह स्पष्ट नहीं होता है।

असामान्य व्यवहार की पहचान करने के लिए मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों (Mental health professionals) द्वारा अनेक कसौटियों (Criteria) की पहचान की गयी है जिसमें सांख्यिकी अवांरवारता (Statistical infrequency) की कसौटी, मानक अतिक्रमण (Norms violation) की कसौटी, व्यक्तिगत व्यथा (Personal distress) की कसौटी, अप्रत्याशा की कसौटी (Criteria of unexpectedness) आदि प्रमुख है। इन सभी कसौटियों के साथ चौक अपनी अलग-अलग कमजोरियाँ हैं, अतः इसमें से किसी भी कसौटी के द्वारा असामान्य व्यवहार की संतोषजनक व्याख्या जो सभी परिस्थिति में मान्य हो, करना सम्भव नहीं है। शायद यही कारण है कि ओल्टमान्नस तथा इमेरी (Oltmanns & Emery, 1995) ने काफी सटीक टिप्पणि करते हुए कहा है कि "असामान्य व्यवहार को परिभाषित करने के बहुत सारे प्रयास किये गये हैं परन्तु उनमें से कोई भी संतोषजनक नहीं है किसी ने भी एक ऐसी संगत परिभाषा नहीं दिया है जो सभी परिस्थितियों में जिसमें संप्रत्यय का उपयोग होता है, इसकी व्याख्या कर सके।

इस विवादास्पद संप्रत्ययको सुलझाने की दिशा में एक सार्थक प्रयास कोमर (Comer. 1995) का चार डो (For D's) के रूप में सामने आया है और जिसपर काफी हर तक आम सहमति भी बन पायी है। कोमर ने असामान्य व्यवहार को चार डी के रूप में समझने का प्रयास किया है। ये सभी चार डी निम्नांकित हैं

1 विचलन (Deviance)

2 तकलीफ (Distress)

3 दुष्क्रिया (Dysfunction)

4 खतरा (Danger)

इन सभी का विस्तार से वर्णन इस प्रकार है:-

1 विचलन (Deviance)-कोमर ने विचलन को असमान्यता की पहचान के लिए एक प्रमुख कसौटी के रूप में उपयोग किया है। इसके अन्तर्गत उन व्यवहारों को असामान्य व्यवहार की श्रेणी में रखा जाता है जो सामाजिक मानक (Social norm) से भिन्न एवं असाधारण होता है।

2 तकलीफ (Distress)-आसामान्य व्यवहार के इस निर्धारक के अनुसार वैसे व्यवहार जो स्वयं व्यक्ति के लिए दुखदायी या तकलीफ देने वाला होता है, को असामान्य व्यवहार की श्रेणी में रखा जाता है।

3 दुष्क्रिया (Dysfunction)-इसके अन्तर्गत असामान्य व्यवहार वैसे व्यवहार को कहा जाता है जो व्यक्ति के दिन-प्रतिदिन के व्यवहार या क्रिया को करने में बाधा उत्पन्न करता है। यह व्यक्ति को इतना अशांत कर देता है कि वह साधारण सामाजिक परिस्थिति या कार्य में भी अपने आप को ठीक ढंग से समायोजित नहीं कर पाता है।

4 खतरा (Danger)-सामान्यत: असामान्य व्यवहार स्वयं रोगी या व्यक्ति के लिए तो खतरनाक होता ही है, साथ ही साथ वह अन्य व्यक्तियों के लिए भी खतरनाक होता है। चूँकि असामान्य व्यक्तियों में असावधानी, घटिया निर्णय, विद्वेष या कुव्याख्या (Misinterpretation) आदि अधिक होता है, अत: उनका व्यवहार दुसरों की प्रत्याशाओं पर खरे नहीं उतरता और चिंताजनक होता है। जैसे मानसिक दुर्बलता (Mental retardation) मनोविदालिता, समाजविरोधी व्यक्तित्व आदि से परिवार तथा समाज को काफी कष्ट सहना पड़ता है।

स्पष्ट: तब कहा जा सकता है कि असामान्यता की व्याख्या के लिए विशेषज्ञों द्वारा अनेक कसौटियों को अपनाया गया है, लेकिन सबसे उत्तम व्याख्या कोमर ने चार डी के रूप में की है जो सर्वमान्य है।